MSNTARGET.COM

https://msntarget.com

MAIN NEWS HEADLINE Tribal Festival भगवान बिरसा मुंडा जतरा का भव्य श

विषय सूची (Table of Contents):

>> रांची में भगवान बिरसा मुंडा जतरा का भव्य शुभारंभ...
>> प्रशासनिक गरिमा और अधिकारियों की उपस्थिति...
>> बिरसा मुंडा स्मृति पार्क से मोरहाबादी मैदान तक निकली ऐतिहासिक सांस्कृतिक यात्रा...
>> मार्ग में नागरिकों का भव्य स्वागत...
>> 10 हजार जनजातीय कलाकारों ने पारंपरिक वाद्ययंत्रों से बिखेरी सांस्कृतिक छटा...
>> विविध जनजातियों का अनूठा संगम...
>> पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज...
>> भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष और बलिदान को दर्शाती 6 आकर्षक झांकियां...
>> झांकियों के प्रमुख विषय...
>> मंत्री चमरा लिंडा का संदेश जल, जंगल और जमीन की रक्षा का संकल्प...
>> सरकार का दृष्टिकोण और संकल्प...
>> युवाओं को अपनी जड़ों और गौरवशाली आदिवासी परंपराओं से जोड़ने का मंच...
>> सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक एकता...
>> मांदर की थाप और पुष्प वर्षा के बीच राजधानी रांची में दिखा भारी उत्साह...
>> उत्सव जैसा वातावरण...
>> निष्कर्ष (Conclusion)...
>> जनता के सवाल (FAQs)...

झारखंड की राजधानी रांची में रविवार को लोक संस्कृति, आदिवासी स्वाभिमान और जननायक भगवान बिरसा मुंडा की पावन स्मृति को समर्पितभगवान बिरसा मुंडा जतराका ऐतिहासिक एवं भव्य शुभारंभ किया गया। इस भव्य आयोजन का मुख्य उद्देश्य राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, प्राचीन परंपराओं और स्वाधीनता संग्राम में भगवान बिरसा मुंडा के अद्वितीय योगदान को जन-जन तक पहुंचाना है।

अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, झारखंड सरकार के तत्वावधान में आयोजित इस राज्यस्तरीय सांस्कृतिक यात्रा को विभाग के माननीय मंत्रीचमरा लिंडाने भगवान बिरसा मुंडा स्मृति पार्क (जेल मोड़) से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। वर्ष 2026 में आयोजित यह जतरा राज्य के सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ती है।

यदि आप सरकार की अन्य लोक कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तोपीएम किसान, आयुष्मान और आवास योजना का लाभ? 17-18 जून खासशीर्षक वाला हमारा विशेष लेख अवश्य पढ़ें।

रांची में भगवान बिरसा मुंडा जतरा का भव्य शुभारंभ

भगवान बिरसा मुंडा जतरा के उद्घाटन समारोह के दौरान पूरा जेल मोड़ परिसर पारम्परिक वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। झारखंड के कोने-कोने से पहुंचे लोक कलाकारों ने पारम्परिक वेशभूषा और आभूषणों में सज-धजकर अद्भुत नृत्य प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमुदाय ने उलगुलान के महानायक को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रशासनिक गरिमा और अधिकारियों की उपस्थिति

कार्यक्रम के सफल संचालन और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने के लिए सरकार के कई उच्चाधिकारी मौजूद रहे। आयोजन स्थल पर मुख्य रूप से निम्नलिखित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे:

>> कृपानन्द झा:प्रधान सचिव, अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग।

>> कुलदीप चौधरी:आदिवासी कल्याण आयुक्त, झारखंड।

>> राजीव लोचन:विशेष सचिव सह निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग।

>> मनीषा तिर्की:परियोजना निदेशक, आईटीडीए (ITDA) रांची।

>> उर्वशी पांडेय:जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, रांची।

सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने यात्रा मार्ग की तैयारियों का निरीक्षण किया और राज्यभर से आए कलाकारों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सम्मानित किया।

बिरसा मुंडा स्मृति पार्क से मोरहाबादी मैदान तक निकली ऐतिहासिक

यह ऐतिहासिक जतरा भगवान बिरसा मुंडा स्मृति पार्क (पुराना बिरसा मुंडा कारागृह), जेल मोड़ से प्रारंभ होकर करम टोली चौक और एसएसपी आवास मार्ग से गुजरते हुए विशाल मोरहाबादी मैदान में संपन्न हुई। पूरे यात्रा मार्ग में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पूरा झारखंड एक रंग में रंग गया हो।

मार्ग में नागरिकों का भव्य स्वागत

यात्रा के दौरान सड़क के दोनों ओर हजारों की संख्या में शहरवासी, छात्र, बुजुर्ग और महिलाएं कलाकारों के स्वागत में खड़े रहे।

जगह-जगह पर स्थानीय नागरिकों और सामाजिक संगठनों द्वारा नर्तक दलों पर पुष्प वर्षा की गई और उनका गर्मजोशी से अभिनंदन किया गया।

नागरिकों के अधिकारों और कानूनी प्रावधानों की जानकारी के लिए आपइंडिया कोड: भारत के सभी कानून और अधिनियम अब एक ही पोर्टल पर!पर जाकर संपूर्ण कानूनी डेटाबेस चेक कर सकते हैं।

10 हजार जनजातीय कलाकारों ने पारंपरिक वाद्ययंत्रों से बिखेरी

इस जतरा की सबसे प्रमुख विशेषता राज्य के सभी 24 जिलों से आए लगभग 10,000 जनजातीय कलाकारों की सक्रिय सहभागिता रही। इतने बड़े पैमाने पर कलाकारों का एक मंच पर एकत्र होना झारखंडी कला और संस्कृति की जीवंतता को दर्शाता है।

विविध जनजातियों का अनूठा संगम

इस वृहद आयोजन में झारखंड की विभिन्न प्रमुख जनजातियों का प्रतिनिधित्व देखने को मिला:

>> संथाल एवं मुंडा समुदाय:अपने पारंपरिक परिधानों और सामूहिक पंक्तियों में नृत्य प्रस्तुति के साथ।

>> उरांव एवं हो समुदाय:ढोल और मांदर की तेज थाप पर ऊर्जावान नृत्य प्रस्तुत करते हुए।

>> खड़िया एवं खरवार समुदाय:अपने लोकगीतों और पारम्परिक आभूषणों की छटा बिखेरते हुए।

पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज

कलाकारों ने ढोल, नगाड़ा, मांदर, बांसुरी, ढाक और शहनाई जैसे पारम्परिक वाद्ययंत्रों की धुन पर समां बांध दिया। मांदर की थाप और नगाड़ों की गूंज से पूरी राजधानी रांची गूंज उठी।

भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष और बलिदान को दर्शाती 6 आकर्षक झा

जतरा के मुख्य आकर्षणों में 6 विशेष रूप से तैयार की गई कलात्मक झांकियां (Tableaux) शामिल थीं। इन झांकियों को इस प्रकार डिजाइन किया गया था कि दर्शक भगवान बिरसा मुंडा के जीवन चरित्र और उलगुलान आंदोलन के इतिहास को सरलता से समझ सकें।

झांकियों के प्रमुख विषय

>> उलगुलान और क्रांति:अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों और जमींदारी प्रथा के खिलाफ उलगुलान का जीवंत चित्रण।

>> जल, जंगल और जमीन की रक्षा:आदिवासी समाज द्वारा प्रकृति संरक्षण के ऐतिहासिक संघर्ष की झलक।

>> जनजातीय जीवन और संस्कृति:झारखंड की ग्रामीण परंपराओं, कृषि पद्धतियों और लोक कलाओं का प्रदर्शन।

सड़क किनारे खड़े लोगों ने इन झांकियों की सुंदर कलाकृति की भूरी-भूरी प्रशंसा की और अपने मोबाइल कैमरों में इन पलों को कैद किया।

मंत्री चमरा लिंडा का संदेश: जल, जंगल और जमीन की रक्षा का संक

जनसभा को संबोधित करते हुए कल्याण मंत्री चमरा लिंडा ने कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा केवल झारखंड के ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष के लिए स्वाभिमान और क्रांति के अमर प्रतीक हैं। उन्होंने अति कम आयु में जल, जंगल और जमीन के अधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

सरकार का दृष्टिकोण और संकल्प

मंत्री ने अपने भाषण में निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर बल दिया:

>> अधिकारों की लड़ाई:भगवान बिरसा मुंडा ने शोषितों और आदिवासियों को अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया।

>> संस्कृति का संरक्षण:राज्य सरकार आदिवासी भाषाओं, लोक कलाओं और धरोहरों को सहेजने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

>> भविष्य की योजनाएं:आगामी वर्षों में इस प्रकार के सांस्कृतिक जतरा और महोत्सवों का दायरा और अधिक व्यापक बनाया जाएगा।

यदि आप सरकार की आवास योजनाओं का लाभ लेना चाहते हैं या अपना नाम सूची में देखना चाहते हैं, तोपीएम आवास योजना: लिस्ट और पात्रता चेक करें, मिलेंगे 1.3 लाख!पर जाकर अपना स्टेटस (status) और एलिजिबिलिटी चेक (check) करें।

युवाओं को अपनी जड़ों और गौरवशाली आदिवासी परंपराओं से जोड़ने

आधुनिकता और डिजिटल युग के दौर में अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बचाकर रखना एक बड़ी चुनौती है। मंत्री चमरा लिंडा ने स्पष्ट किया कि इस जतरा का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी और युवाओं को अपनी समृद्ध विरासत से परिचित कराना है।

सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक एकता

इस आयोजन ने युवाओं को अपनी भाषा, परिधान और लोक संगीत पर गर्व करने का अवसर प्रदान किया है। जब युवा अपनी परंपराओं को समझेंगे, तभी वे समाज और देश के विकास में अपनी जड़ों से जुड़कर योगदान दे सकेंगे। इस प्रकार के आयोजनों से सामाजिक समरसता, आपसी भाईचारा और सांस्कृतिक चेतना को बल मिलता है।

मांदर की थाप और पुष्प वर्षा के बीच राजधानी रांची में दिखा भा

रविवार को रांची की सड़कें उत्सव के रंगों में सराबोर नजर आईं। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, हर वर्ग के नागरिक इस ऐतिहासिक लम्हे का गवाह बनने के लिए सवेरे से ही सड़कों पर डटे हुए थे।

उत्सव जैसा वातावरण

मोरहाबादी मैदान पहुंचने पर सभी 10 हजार कलाकारों का सामूहिक नृत्य प्रदर्शन आयोजित किया गया। ढोल और मांदर की गूंज के बीच दर्शकों ने कलाकारों का करतल ध्वनि से स्वागत किया। यह आयोजन रांची के सांस्कृतिक इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

भगवान बिरसा मुंडा जतरा केवल एक सांस्कृतिक जुलूस नहीं, बल्कि झारखंड की अस्मिता, स्वाभिमान और जनजातीय गौरव का भव्य प्रकटीकरण है। 10 हजार कलाकारों का अनुशासित प्रदर्शन, मनमोहक झांकियां और जन-जन का अपार उत्साह इस बात का प्रमाण है कि भगवान बिरसा मुंडा के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। राज्य सरकार द्वारा आदिवासी कला और संस्कृति के संरक्षण की यह पहल सराहनीय एवं ऐतिहासिक है।

जनता के सवाल (FAQs)

भगवान बिरसा मुंडा जतरा का शुभारंभ रांची स्थित भगवान बिरसा मुंडा स्मृति पार्क (जेल मोड़) से कल्याण मंत्री चमरा लिंडा द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया।

यह आयोजन अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, झारखंड सरकार के तत्वावधान में आयोजित

किया गया था।

झारखंड के सभी जिलों से आए लगभग 10,000 जनजातीय कलाकारों ने इस ऐतिहासिक जतरा में भाग लिया।

यह जतरा बिरसा मुंडा स्मृति पार्क (जेल मोड़) से शुरू होकर करम टोली चौक और एसएसपी आवास मार्ग से होती हुई मोरहाबादी मैदान में समाप्त हुई।

इसमें संथाल, मुंडा, उरांव, हो, खड़िया, खरवार सहित राज्य की विभिन्न जनजातियों के कलाकार पारंपरिक परिधानों में शामिल हुए।

कुल 6 आकर्षक झांकियां प्रदर्शित की गईं, जो भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष, अंग्रेजों के खिलाफ उलगुलान और आदिवासी संस्कृति पर आधारित थीं।

प्रधान सचिव कृपानन्द झा, कल्याण आयुक्त कुलदीप चौधरी, विशेष सचिव राजीव लोचन, आईटीडीए निदेशक मनीषा तिर्की और डीपीआरओ उर्वशी पांडेय उपस्थित थे।

उन्होंने जल, जंगल और जमीन की रक्षा का संकल्प दोहराया और युवाओं को अपनी जड़ों एवं आदिवासी सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ने का आह्वान किया।

कलाकारों द्वारा मांदर, नगाड़ा, ढोल, बांसुरी, शहनाई और ढाक जैसे पारंपरिक झारखंडी वाद्ययंत्र बजाए गए।

झारखंड सरकार के कल्याण विभाग के आधिकारिक पोर्टल पर जाकर लेटेस्ट अपडेट्स (latest update 2026), कार्यक्रम सूची और संबंधित PDF फाइल डाउनलोड कर जानकारी चेक कर सकते हैं।